Forms of Shiva images

शिव की मूर्तियों के विभिन्न रूप

Navin Kumar
Professor
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005

P.G. / M.A. IInd Semester,

Dept. of A.I.H. & Archaeology. Patna University

Paper- C.C.-9, ANCIENT INDIAN ART, ARCHITECTURE AND ICONOGRAPHY

ब्राह्मण धर्म के त्रिदेवों में शिव संहारकर्ता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। परन्तु शिव के उपासक अपने इष्टदेव का सृष्टि अथवा पालन कार्य से भी संबंधित करते हैं। इस प्रकार सृजन, पालन तथा संहार तीनों शिव के कार्य माने गए। इसके अतिरिक्त अनुग्रह एवं तिरोभाव भी उनके कार्य माने गए हैं। ये पांचों मिलकर उसके पंचकृत्य होते हैं। शिव की कल्पना एक योगी, नृत्य संगीत के प्रवर्तक, महेश्वर, उमापति, मायिन आदि के रूप में की गयी है। सभी जीवों क स्वामी के रूप में उसे भूतनाथ तथा भूतपति कहा गया है। शिव वैदिक देवता नहीं थे। वह आर्यों के आगमन के पूर्व सैन्धव सभ्यता में पूजित होते थे। कालान्तर में वैदिक देवता रूद्र के साथ उसे अपनाकर कर आर्यों ने इस देवता को अपना लिया। शिव के विभिन्न नामों का उल्लेख अथर्ववेद, ब्राह्मण साहित्य तथा उपनिषद में हुआ है। इनसे शिव के आठ विषद रूपों का ज्ञान होता है जिनमें रूद्र, शर्व, उग्र एवं अशनि शिव के रौद्र अथवा संहारक रूप हैं तथा भव, पशुपति, महादेव तथा ईशान सौम्य रूप। इसके अतिरिक्त शिव की पूजा प्रतीक के रूप में सैन्धव काल की तरह बाद में भी लोकप्रिय हुई।

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारंभ में प्रतीक के रूप में ही शिव की पूजा लोकप्रिय थी। यह प्रतीक शिवलिंग है। प्रारंभ में लिंग सादा होते थे। इसे

मुखाकृति से युक्त किया जाने लगा। शिव की प्रतिमा भी बनने लगी। वैसे शिव की आकृति ईसवी सन् के प्रारंभ से ही उत्कीर्ण की जाने लगी परन्तु इसकी प्रतिमाएं सही रूप में गुप्तकाल काल से बनने लगी।

लिंगमूर्ति मंदिर के मुख्य भाग अथवा गर्भगृह में स्थापित की जाती है। यह पीठ अथवा योनि में स्थित होता है। लिंग एवं योनि को शिव एवं पार्वती अथवा पुरूष एवं प्राकृतिक का प्रतीक माना गया है। गोपीनाथ राव ने शैवागम के आधार पर विभिन्न प्रकार के शिवलिंगों का वर्णन किया है। गुप्तकाल में शिवलिंगों की पूजा को विशेष महत्व दिया गया। लिंग के पूजा भाग अर्थात रूद्र भाग पर शिव के मुख की आकृति बनायी जाने लगे। एक मुखी लिंग की अनेक मूतियॉ मध्य भारत से मिली है। रूपमण्डन के आधार पर गोपीनाथ राव ने एक, तीन, चार अथवा पॉच मुखलिंगों का वर्णन किया है। विष्णुधर्मोत्तर के अनुसार पॉच मुख शिव के पॉच रूप –सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरूष तथा ईशान का अभिज्ञान कराते हैं। परन्तु पंचमुखी लिंग उपलब्ध नहीं हुए हैं। गुप्तकालीन एक या चतुर्मुखी लिंग उत्तर प्रदेश तथा बिहार से प्राप्त हुए हैं। मुखलिंग आकृति में जटामुकुट, चन्द्रमा से विभूषित तथा ललाट पर तीसरा नेत्र स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

दक्षिण भारतीय शिवलिंगों में गुड़ीमल्लम का मुखलिंग विशाल एवं काल पत्थर का है। यह पॉच फीट उॅचा है। इसके निचले भाग में शिव की स्थानक प्रतिभा अप्समार के पीठ पर खड़ी है। उपर गोलाकार भाग में दो गहरा कटाव है। इसीलिए इसे मुखलिंग की श्रेणी में रखा गया है।

शिवलिंग से उत्पन्न मनुष्य आकृतियों की देव प्रतिमा लिगोदभव मूर्ति कही जाती है। इसका अंकन कॉची, एलोरा तथा तंजोर के बृहदेश्वर मंदिर में हुआ है।

संभवतः गुप्तकाल से शिव की पूर्ण प्रतिमा बनने लगी। इनका निर्माण पूर्व मध्य काल में अधिक संख्या में होने लगा। शिव के घोर एवं अघोर प्रतिमाओं के अतिरिक्त ऐसी प्रतिमाएं मिली जिसे इन वर्गों के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता। शैवागम के आधार पर इन्हें 'शिव चन्द्रशेखर' कहा जाता है। इनमें शिव का कल्याणकारी भाव व्यक्त होता है। इसमें शिव कभी अकेला तो कभी पार्वती के साथ में दिखाया गया है। ये प्रतिमायें खड़ी अथवा बैठी हुई बनाई गई। गोपीनाथ राव ने तीन प्रकार की चन्द्रशेखर मूर्तियों का उल्लेख किया है तथा दक्षिण भारत से प्राप्त इनके उदाहरण भी दिए हैं। मध्ययुगीन चन्द्रशेखर प्रतिमाओं में प्रतिमा के पिछले दोनों हाथों में पाश तथा मृग दिखाए गए हैं और सामनेवाले दोनों हाथ **अभय** एवं **वरद** मुद्रा **में** हैं।

हरपार्वती अथवा उमासहित शिवमूर्ति का सुंदर उदाहरण मथुरा संग्रहालय में है। यह **बलुआ** पत्थर पर उतीर्ण अध्युचित्र है। वृहदेश्वर मंदिर में चतुर्भुजी शिव के सामने मुख किये, बॉये हाथ से उमा को आलिगन में दिखाया गया है। वृषवाहन शिव की अइहोल मूर्ति में शिव को द्विभंग मुद्रा में अपने वाहन पर झुके हुए दिखाया गया हैं इसके पिछले हाथ में त्रिशुल, सामने वायें हाथ में नाग और दायॉ हाथ वरद् मुद्रा **में** वृषभ की सींग पर टिका है।

शिव की प्रारंभिक आसन मूर्तियों में भारतीय संग्रहालय में एक उत्कीर्ण मूर्ति संकलन **पियर्से** में है। यह त्रिमुखी अथवा चतुर्मुखी है जो नन्दी पर सुखासन में बैठी है। बीच वाले मुख के दोनों ओर केश सज्जा है। कंधे से ज्वाला निकलता है और तीनों सिर को धेरता प्रभामंडल है। इसका निर्माण काल कुषाण का उत्तरार्द्व माना जा सकता है।

आसन मूर्तियों में उमा को शिव की जंघा पर बैठी दिखाया गया है जिसे शिव एक हाथ से प्यार कर रहे हैं। वाहन नन्दी एवं सिंह पीठिका पर उत्कीर्ण मिलता है।

आसन मूर्तियों में दक्षिण की प्रतिमाए विशेषता रखती है। इन्हें दक्षिणा मूर्ति कहा गया है। यह शिव को योग एवं ज्ञान की शिक्षा दक्षिण की ओर मुख किए देते हुए दिखाता है।

विष्णु धर्मोत्तर में उमा महेष्वर मूर्तियों का वर्णन मिलता है। शिव पार्वती सुखासन में बैठे हैं, शिव का दायॉ हाथ वरद मुद्रायें और बायॉ हाथ चण्डेश के सिर पर है। यह चण्डेशानुग्रहमूर्ति कहा जाता है जिसका उदाहरण दक्षिण भारत के मंदिरों में मिलता है।

शिव की सौम्य प्रतिमाओं के संदर्भ में सदाशिव मूर्ति का उल्लेख आवश्यक है। दसवीं शताब्दी में सेनवंशी शासकों ने इस प्रकार की मूर्ति को दान पात्रों पर अंकन के लिए बने मुहरों पर स्थान दिया। इसमें शिव दसभुजी एवं पंचमुखी है। इनके अतिरिक्त कल्याण सुन्दर अथवा वैवाहिक मूर्ति तथा गंगाधर मूर्ति भी इसी श्रेणी की है।

कल्याण सुन्दर मूर्ति में शिव पार्वती का दृश्य प्रस्तुत किया जाता है। पटना संग्रहालय में ऐसी प्रतिमा सुरक्षित है जिसमें शिव के बायीं ओर पार्वती खड़ी है। पार्वती के एक हाथ में दर्पण तथा दूसरा शिव के हाथ में है। शिव के बाकी तीन हाथों में त्रिशुल, डमरू और कपाल है। एलोरा की गुफा में यह दृश्य उत्कीर्ण हैं।तंजौर से कॉस्य निर्मित प्रतिमा मिली है। इसमें कमल पुष्प पर शिव एवं पार्वती को खड़ा दिखाया गया है। शिव के सिर पर जटाजूट, मुकुट, कानों में कुण्डल, सर्प का यज्ञोपवीत, दो भुजाओं में त्रिशुल एवं मृग तथा बायें एक हाथ वरद मुद्रा में तथा दाहिना हाथ नीचे है। पार्श्व में खड़ी पार्वती शिव के हाथ को पकड़ी है। एलौरा में ब्रह्मा को यज्ञवेदी के समक्ष पुरोहित की तरह बैठे तथा ब्रह्मा के पीछे इन्द्र तथा पार्वती को दिखाया गया है। अनेक देवताओं का भी अंकन हुआ है। मेराघाट के गौरीशंकर में उत्कीर्ण प्रतिमा भी सुन्दर है। इसमें शिव पार्वती दोनों द्विभुजी है।

गंगाधर में शिव द्वारा गंगा को अपनी जटा में रोककर उसका वेग कम करने की पौराणिक कथा का अंकन हुआ हैं भारतीय संग्रहालय में बिहार से प्राप्त एक गंगाधर मूर्ति है। नटराज मंदिर (चिदम्बरम स्थित) के इस मूर्ति में शिव को खड़ा दिखया गया है। दायॉ पैर सीधा तथा बायॉ पैर घुटने से मुड़ा हैं। बायें पार्श्व में नारी रूप में द्विभुजी गंगा की आकृति प्रदर्शित है।

एलोरा के कैलाश नाथ मंदिर में शिव की रावणानुग्रह प्रतिमा उत्कीर्ण है जिसमें पर्वत उठाए रावण पर शिव को अनुग्रह करते हुए प्रदर्शित किया गया है। पर्वत के उपर शिव पार्वती बैठे हैं और नीचे रावण है।

हरिहर प्रतिमा में आधा विष्णु और आधा शिव होता है जिनके हाथों में अपने अपने आयुध होते है। इसी प्रकार अर्द्धनारीश्वर मूर्ति में शिव और शक्ति का एकीकरण किया गया है।

पौराणिक कथाओं के आधार पर शिल्पकारों ने शिव की विभिन्न संहारक रूप में प्रतिमायें बनायी अथवा दीवारों के उत्कीर्ण किया जैसे गजासुर संहारमूर्ति, त्रिपुरान्तक मूर्ति, अन्धकासुर वध मूर्ति, जालन्धर वध मूर्ति, कालारि मूर्ति, कामदहन मूर्ति, शरमेष मूर्ति आदि।

गंगैकोण्डचोलपुरम के मंदिर के तीन ताखेां में कामदहन कथानक का चित्रण हुआ है। केन्द्रीय ताखा में शिव को ललिताक्षेप मुद्रा में क्रोधपूर्ण दिखाया गया है। मैसूर के अमृतेश्वर तथा तंजोर के दरसूरम मंदिरों में गजासुर संहार मूर्ति का चित्रण हुआ है। इसमें शिव को हाथी रूपी दानव के सिर पर नृत्यकरते हुए दिखाया गया है। तंजोर के वृहदेश्वर मंदिर की कॉस्यमूर्ति में त्रिपुरान्तक रूप का चित्रण हुआ है। प्रत्यालीढ मुद्रा में शिव की चतुर्भजी मूर्ति खड़ी है, दोनों हाथ वाण चलाने की मुद्रा में है। कॉची की अष्टभुजी मूर्ति में मुण्डमाला, ललाट पर चन्द्रमा, और बाईं ओर शक्ति की आकृति दिखाई पड़ती है। त्रिपुरान्तक मूर्ति में ब्रह्मा को शिव के सारथी के रूप में दिखाया गया है।

अन्धकासुर मूर्ति, अन्धक नामक राक्षस को पदाक्रान्त करते हुए एलोरा तथा एलिफेन्टा में मिलती है। इसके हाथों में तलवार तथा खून का प्याला उल्लेखनीय है। शरमेष मूर्ति शिव के उग्ररूप का ही प्रदर्शन करता है। दारासुरम मंदिर में शिव को शरमेष रूप में (मनुष्य, पशु पक्षी का मिला जुला रूप) चित्रित है। इसके अतिरिक्त भैरव, अघोर, रौद्र पाशुपत, वीरभ्रद, विरूपाक्ष तथा कंकाल की गणना इसके उग्र रूप में की जा सकती है। आगमो में भैरव के 64 प्रकारों का वर्णन मिलता है। साधारणतः उत्तर भारत में बटुक भैरव की मूर्तियॉ मिलती है। वह नग्न, भयानक चेहरेवाला, निकले दॉत वाला, गोल ऑखों वाला दिखाया गया है। इनके हाथों में तलवार, खटवांग, शूल एवं कपाल होता है। भिक्षाटन मूर्ति की गणना भी रौद्ररूप के अन्तर्गत की जा सकती है।